लोक गीत : संस्कृति के रक्षक

ज्योति शर्मा
(शोध छात्र)
स्वामी विवेकानन्द सुभारती
विश्वविद्यालय, मेरठ

आत्माभिव्यक्ति मानव का स्वभाव है। यह आकांक्षा उतनी ही प्राचीन है, जितना कि मानव स्वयं। मानव द्वारा अनुभूति के विशेष क्षणों में जो भाव लहरी शब्द ग्रहण करती है, वही लोकगीत है। मानव की चेतना के साथ इसका अटूट सम्बन्ध हैं। गुफा में निर्वाह करने वाले मानव में जैसे–जैसे सभ्यता के अंकुर फूटे, उसने अपने भावों को परस्पर बांटा। प्रकृति ने कभी उसे प्रसन्नता दी, तो कभी रूदन, कभी वह उससे भयाक्रांत हुआ तो कभी प्रकृति के लावण्यमय रूप ने उसके तन–मन को झकझोर दिया और उसके हृदय से सहज भाव–लहरी प्रस्फुटित होने लगी– यही लोकगीत बन गया। आज यद्यपि मानव सभ्यता और उन्नति के शिखरों को स्पर्श करने लगा है, तथापि भावाभिव्यक्ति के कुछ आदि माध्यम अभी भी शेष हैं, वे हैं– लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य तथा लोकोक्ति। इनमें 'लोक' शब्द उन समुदाय विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया है, जिन्हें आधुनिक सभ्यता ने स्पर्श नहीं किया है, जिनमें सांस्कृतिक चेतना का अहम् विकसित नहीं हुआ है, पांडित्य प्रदर्शन जिनका स्वभाव नहीं बना है। जो सहज है तथा जीवन में अनुभूत अपने भावों को सहज रूप से प्रस्तुत करता है, उस जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति लोकगीत है।

जनसाधारण द्वारा जो परम्परागत गीत गाए जाते हैं, वे लोकगीत हैं। किसी प्रकार का शास्त्रीय बंधन न होने के कारण ये केवल अनुकरण मात्र से सीखे जाते हैं तथा मौखिक परम्परा में पूर्ववर्तियों से पाश्चात्यवर्तियों को प्राप्त होते हैं।

लोकगीतों का सुंदरतम प्रतिबिम्ब लोकसंगीत में दिखाई पड़ता है क्योंकि लोकगीत के शब्दों व स्वरों के चयन में कृत्रिमता का अभाव मिलता है, उनमें लोकजीवन का सीधा–सादा परिचय होता है, वे व्यक्ति के बाह्य जीवन के साथ–साथ, उनके मानसिक भावों के भी परिचायक होते हैं।

भारतीय लोकगीतों की रचना सामूहिक रूप से होती है, अतः इसमें वैयक्तिक भावना का अभाव रहता है। इन गीतों के रचयिताओं में आत्म प्रचार की प्रवृत्ति नहीं हैं। वे अपने गीतों में निजत्व को कहीं भी आरोपित नही करते। जिस प्रकार छोटे बालक गीत बनाते, गुनगुनाते, गाते जाते हैं, परन्तु इनमें से कोई भी बालक गीत का रचयिता होने का दावा नहीं करता, और न यह ही याद रखता है कि किस गीत में, कौन सी कड़ी किस बालक ने जोड़ी है। उदाहरणार्थ–

हरा समंदर गोपी चंदर,
बोल मेरी मछली कितना पानी?

इस प्रचलित खेल गीत को किसने रचा, कोई नहीं जानता। असंख्य स्त्री–पुरूषों के सामूहिक प्रयत्नों में इन गीतों का जीवन प्राण पाता रहता है, जिनकी वाणी में मस्तिष्क नहीं हृदय है, जिनके विनय में छल नहीं, पश्चाताप है, जिनकी मैत्री के फूलों में स्वार्थ का कीट नहीं, प्रेम का परिमल है, जिनके मानस जगत में आनंद है, शांति हैं, सुख है, प्रेम है, करूणा है, त्याग है, क्षमा है, विश्वास है, उन्हीं निश्छल, निष्कपट स्त्री–पुरूषों के हृदय–आसन पर प्रकृति गान करती है, प्रकृति का वही गान लोकगीत है।

लय लोकगीतों की आत्मा है। ग्रामीण जनता के हृदय से निकले सीधे–सरल शब्दों का स्पर्श जब लय तत्व से होता है तो वह अद्वितीय सौंदर्य से युक्त होकर असीम आनंद की सृष्टि करते हैं। लोकगायक एवं गायिकाओं में लय की अद्भुत क्षमता होती है।

इन गीतों में किसी पंक्ति विशेष की पुनरावृत्ति एक महत्वपूर्ण क्रिया है। प्रायः गीत की प्रथम या द्वितीय पंक्ति की पुनरावृत्ति की जाती है। प्रत्येक गीत में एक टेक पद होता है और गायक उस पद की पुनरावृत्ति द्वारा श्रोताओं के अंतःकरण में विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं। लय और तुक व्यवस्था के लिए लोकगायक कई बार निरर्थक शब्दों का भी समावेश कर लेते हैं। लोकगीतों की रचना में प्रत्येक पंक्ति किसी भी प्रकार की नियमबद्धता से स्वतंत्र होती है। ऐसी अवस्था में निरर्थक शब्दों द्वारा पंक्तियों में सामंजस्य उत्पन्न किया जाता है।

जैसे–

अक्कड़–बक्कड़ बंबे बो,
अस्सी–नब्बे पूरे सौ।।

बहुत से गीतों में मनोभावों की अभिव्यक्ति कथोपकथन के रूप में होती है। पहली पंक्ति में प्रश्न और दूसरी पंक्ति में उत्तर की योजना रहती है, जैसे–

हिंडोला कुंज बन डालो रे,
झूलन आई राधिका प्यारी,
काहे के खंभ लगवाए रे,
काहे की डारी डोरिया प्यारी।
चंदन के खंभ लगवाए रे,
रेशम की डारी डोरिया प्यारी।।

इस प्रकार के गीतों में उत्कंठा का आविर्भाव होता है, जो श्रोताओं के लिए आनंददायक सिद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण जीवन शैली का पूर्ण परिचय इन गीतों में प्राप्त हो जाता है। पानी भरना, झूलना, चक्की चलाना, खेत में रोपाई, कटाई करना, आदि सभी विषयों के गीत हम सुन सकते हैं। प्रसन्नता, शोक, आश्चर्य, क्रोध, विरह, वेदना, श्रृंगार, भक्ति, उत्साह, सभी भाव इन गीतों में सहज ही देखे जा सकते हैं और तो और हमारे भारतीय लोकगीतों में तो गाली देने की परम्परा भी प्रचलित है और यह प्रचलन प्राचीन काल से सुनते आ रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्रीराम जानकी विवाह के अवसर पर अयोध्या कांड में लिखा है–

जेवंत देत मधुर धुनि गारी।
लै–लै नाम पुरूष अरू नारी।।

केवल मनोभाव ही नहीं बल्कि लोकगीतों में सामाजिक परिस्थितियों का भी चित्रण होता है। इन गीतों में अलंकार व छंद की योजना देखने को नहीं मिलती। सीधे–सच्चे सरल भावों की सहज अभिव्यक्ति होती हे। ये गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं, जो परम्पराओं को जीवित रखने के प्रबल स्रोत हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी ये गाए जाते हैं और अनंत काल तक गाए जाते रहेंगें।